वाल्मीकि जयन्ती

प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी
पूर्व कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान,
केन्द्रीय विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

इन्दीवर यल श्यामः ग्राम मनोहरम् ।
निलाम कामना रामं, तकामं स्वरूपतः ॥
लोकाभिराम माराम, धर्मद्रुम समन्वितम् ।
श्री रामं तमहं वन्दे, विरामं पाप कर्मणः ।।

नीलकमल की पंखुड़ियों के समान श्याम, कुलों के ग्राम या समूह मनोहर निकामया पूरी तरह कामनामो के आराम या परिपूर्ण करने वाले अपने स्वरूप से जित काम या कामदेव को जीतने वाले, लोकाभिराम धर्मद्रुम से समन्वितः आराम या उद्यान तथा पाप कर्मो के विराम श्री राम की मैं वन्दना करता हूँ।

वााल्मीकि रामायण में राम का जो स्वरूप है, उस पर हम विचार करेंगे। हम सभी जानते है कि संसार की अनेक भाषाओं में रामायण पर काव्य लिखे गये। असंख्य रामायण काव्य विश्व साहित्य में है। भारतीय भाषाओं में, संस्कृत में, हिन्दी में, तमिल, तेलुगु, मलयालम, उन्नड़, गुजराती, मराठी, नेपाली और बंग्ला में इन सभी भाषाओं में रामायण पर अनेक काव्य लिखे गये। भारत के बाहर देशों में विशेष रूप से दक्षिण पूर्व एशिया के देशों में प्राचीन काल से लेकर अठाहरवी-उन्नीसवी शताब्दी तक रामायण की कथा को लेकर काव्य उन-उन देशों की भाषाओं में लिखे जाते रहे । थाइलैण्ड में थाई भाषा में रामकीर्ति या रामकीयन जिसे कुहते हैं बहुत बड़ा महाकाव्य है। जवानीज में जिसको कवि भाषा कहते हैं अत्यन्त ही सुन्दर महाकाव्य मध्यकाल में रामायण की कथा को लेकर लिखे गये। मलेशिया की भाषाओं में, सुमात्रा की भाषा में, वियतनाम या चम्पा जिसको कहा जाता था वहां की भाषा में, फिलीपीन्स देश वहाँ की भाषा में और अनेक देशों की अपनी-अपनी भाषाओं में रामायण की कथा को लेकर काव्यों की रचना होती रही। और अनगिनत काव्य जिनकी गिनती करना असंभव है विश्व में रामायण को लेकर प्राचीन काल से अभी तक लिखे जाते रहे हैं। लिखे भी जाते रहेंगे । जितने जो भी काव्य लिखे गये संसार की इन सब भाषाओं में उन सबका मूल वाल्मीकि का रामायण है। इसमें तो काई सन्देह नहीं। राम के चरित्र की यदि बात करते हैं तो राम का जो चरित्र वाल्मीकि ने अपनी रचना में प्रस्तुत कर दिया वह युग-युगों तक आदर्श बना रहा है। और बना रहेगा। मैंने 'वाल्मीकि चरितम्' नाम से एक काव्य लिखा है। मैंने आरंभ में जो दो

श्लोक पढ़े हैं वो भी इसी महाकाव्य के हैं। श्रीराम की वन्दना के । उस महाकाव्य में वाल्मीकि के सन्दर्भ में मैंने जो कहा है उसको पढ़कर फिर मैं उनके राम पर चर्चा करूंगा क्योंकि मेरी जो मान्यता वाल्मीकि के राम के चित्रण के सम्बन्ध में है उसका कुछ सार मैंने इन चार श्लोकों में बताने की चेष्टा की है।

पूर्वरता प्रसङ्गश्च, अस्तामलक सन्निभाः ।
प्रत्यभान्त पुरस्तस्य, घटिता घटना यथा।।
वाल्मीकिना स्वयं दृष्टा, रामजीवन रेखिकाः।
उन्मील्य तूलिकाभिस्ता, चित्रत्वेन विनिर्मिता ।।

पूर्व में ले चुके वृतान्त, घरचुडी घटनाएं और घट रही घटनाएं उस ऋषि वाल्मीकि के आगे इस तरह प्रत्यक्ष होते गये जैसे कि वे उनकी हथेली पर थिरक रहे हों, जैसे हथेली पर रखा हुआ आँवला साफ दिखाई देता है। वाल्मीकि ने राम के जीवन की रेखाएँ जैसी स्वयं देखी उन्हें अपनी तूलिका से उकेर कर उनसे सम्पूर्ण सर्वाङ्ग, रमणीय चित्र बना दिया। आगे कहा गया है -

ना करिष्य यदि प्राज्ञः, काव्यं रामायणं कविः ।
रामस्य कोऽपिनामापि, क्वाज्ञास्यत भुवने जनः।।

प्रज्ञा सम्पन्न ऋषि कवि वाल्मीकि ने राम की रामायण की रचना न की होती तो राम का नाम भी इस संसार में कोई नहीं जान रहा होता।

रामः स्वयं यथा दृष्टः, कविना क्रान्तः दर्शिनः ।
तस्य सत्यं तथा तस्य चायतिस्तेन वर्णिता ॥

उन क्रान्तिदर्शी ऋषि कवि वाल्मीकि ने जैसा राम को स्वयं देखा वैसा ही उनका सत्य उनकी आयति या संभावनाएं उन्होंने अपने काव्य में प्रस्तुत की।

रामो यत् रामतां यातु रात्रगो रावना इतः।
जगदम्बा इता सीता वाल्मीकिस्तत्र कारणम् ॥

राम जो राम बन गये, रावण जो रावण बनकर रह गया, सीता जो जगदम्बा हो गई, उसमें वाल्मीकि ही कारण है।

मेरी यह निश्चित मान्यता है कि वाल्मीकि ने राम का जो स्वरूप निश्चित कर दिया, उसकी समाज को आज बहुत आवश्यकता है।

वह स्वरूप केवल वाल्मीकि से ही जाना जा सकता है। उसके लिए पहले हमको ये जानना होगा कि वाल्मीकि ने क्यों रचना की राम की। उनके मन में क्या था। इसका तो वाल्मीकि रामायण के आरंभ मे ही वर्णित है। उनके भीतर एक बेचैनी थी वो कुछ खोज रहे थे कि क्या मेरे समय में ऐसा कोई मनुष्य है जिसकी गाथा मैं प्रस्तुत करूँ। जो युगों-युगों तक गाई जाती रहे। इसलिए कि वह संबल बने कि वह जीवन का आधार बनेगी। ये उनके भीतर एक जिज्ञासा थी और इसको लेकर उसके मन में सुगबुगाहट थी खोज थी । तभी नारद उनके पास आये और नारद से उन्होने पूँछा जो प्रश्न है-

कोऽस्मिन् साम्प्रतंलोके गुणवान् कस्य वीर्यवान् ।
चारित्रेण चको युक्तः सर्वभूतेषु को हितः ।।

कौन है हमारे समय में इस समय में साम्प्रतम् कहा है, तो मेरे अपने समय में क्या कोई ऐसा मनुष्य है जो कि पूरी तरह से गुणवान् हो, वीर्यवान् हो, पराक्रमी हो, धर्मज्ञ हो, कृतज्ञ हो, सत्य पर अडिग रहने वाला हो, अपने व्रत का पालन करने वाला हो, उसका चरित्र पूरी तरह से निर्मल हो और लोकोपकार में सदैव लगा रहने वाला हो । '**सर्वभूतेषु को हितः**' सारे संसार के सारे प्राणियों का हित करने में निरन्तर लगा रहने वाला हो। वो विद्वान् भी हो, जानकार भी हो। चरित्र से बड़ा हो सकता है, बुद्धिमान हो सकता है लेकिन ज्ञानी विद्वान् नहीं होगा तब भी सम्पूर्ण मनुष्य नहीं होगा। ''**कश्चैक प्रियदर्शनः**'' दिखने में बहुत भला लगता हो । इतना सब होने पर भी यदि देखने में आकर्षित नही करता है तो लोग अपने मन में उसकी मूर्ति कैसे बिठायेंगे। प्रियदर्शन भी उसको होना चाहिए। आत्मस्थ रहने वाला हो। अपने भीतर अडिग हो सकता हो। अपने आप को संभाल सकता हो। ''**जितःक्रोधो**'' क्रोध को जिसने जीत लिया हो । ''**धुतिमान्**'' तेजस्वी हो। किसी से कभी ईर्ष्या न करने वाला हो। ''**कस्य विभ्यति देवाश्च, जात रोषस्य संयोगे।**'' इतना पराक्रमी हो कि वो संग्राम में उतर पड़े तो देवता भी काँप उठे। हमारे यहाँ हमारे महाकवियों ने ऐसे पराक्रमियों की कामना की है जिनके आगे देवता भी थर्राते हैं। देवताओं के आगे जो नाक नहीं रगड़ते और कालिदास ने चित्रित किया है, रघु भिड़ गया इन्द्र से और इन्द्र के भी उसने दांत खट्टे कर दिए।

इन्द्र उनके अश्वमेध का अश्व चुरा कर ले गये थे। उसके पिता का । उसने पीछा किया उनका। भाग रहे थे । स्वर्ग तक उनका पीछा किया और लड़ाई की। मनुष्य है तो जितने भी देवता है वो हमारी ही सृष्टि है। और मनुष्य अन्ततः बड़ा है। अपने पराक्रम से अपनी बुद्धिमत्ता से। ऐसा मनुष्य चाहिए। वाल्मीकि ऐसे मनुष्य ही खोज करते रहे हैं। नारद कहते हैं कि -

बहु दुर्लभाश्चैव एत्वया कीर्तिता गुणाः।
वने भक्षाम्यहं बुध्वा तैर्युक्ता श्रूयतां नरः।।

हे मुनि तुमने तो बहुत सारे दुर्लभ गुण गिना दिये । एक व्यक्ति में इतने सारे गुण मिलना बहुत मुश्किल है लेकिन

एक मनुष्य है - ''**तैर्युक्तः श्रूयतांनरः**'' -जिसमें सारे गुण हैं ऐसे नर के बारे में ऐसे मनुष्य के बारे में मैं तुम्हें बताता हूँ किन्तु मूल प्रतिज्ञा है कि ऐसे मनुष्य की खोज जो कि सारे समाज के लिए उद्धारक प्रेरक बन सके जिसकी कथा युगों-युगों तक समाज के लिए सम्बल और आदर्श बनी रहे। उसकी खोज से रामायण वाल्मीकि की आरंभ होती है। राम का चरित्र उनके सामने है क्यों कि राम को देख रहे हैं। केवल नारद दिशा निर्देश करते हैं मौजूद है तुम्हारे तो सामने ही है। तुम तो खुद जानते हो देख रह हो । वाल्मीकि तो रामायण की कहानी में स्वयं पात्र भी हैं। राम उनसे मिलने आते हैं। राम को रास्ता बताते हैं तो राम के जीवन में वाल्मीकि है। वाल्मीकि के भीतर राम है, राम के भीतर वाल्मीकि है। दोनो एक दूसरे को देखते हैं, समझते हैं। इस दृष्टि से वाल्मीकि राम का चित्रण करते हैं और नारद राम के गुण बताते हैं कि वो हमारे समय में इक्ष्वाकुवेश के सम्राट हैं, राजा हैं। ''**इक्ष्वाकु वंशः प्रभोः रामो नाम जनैःश्रुतः।**'' लोग बहुत मानते हैं उनको। अपने आपको उन्होंने वश में कर रखा है। द्युतिमान् तेजस्वी हैं। धृतिमान् है, नीतिवान् है। बोलने में बहुत बढ़िया बोलते हैं। वाणी पर उनका अधिकार ये सब है।

''**धर्मज्ञ सत्यसन्धश्च प्रजानां चहिते रतः॥**'' ये बहुत बड़ी बात है कि निरन्तर प्रजा का हित करने वाले जो वाल्मीकि, जानना चाहते थे कि हमेशा लोगों के बारे में सोचने वाला, सुख दुःख की खबर रखने वाला, उनके लिए हमेशा लगा रहने वाला परोपकार में, ऐसा आदमी कौन है। अपने सत्य पर जो अडिग रहता हो। अपने धर्म पर जो अडिग रहता हो।

''**यशस्वी ज्ञान सम्पन्नः, शुचिर्वश्यः समाधिमान् ॥**''

ये लम्बी सूची है और ''**सर्व शास्त्रार्थसम्पन्न**'' सारे शास्त्रों का जानकार भी हो । ''**स्मृतिमान् प्रतिभानवान्**'' स्मृति उसकी अच्छी हो, याददारत बहुत अच्छी हो । प्रतिभा कुशाग्र बुद्धि का हो । मेधावी हो । ''**सर्वलोकः प्रियः**'' उसी बात को कहते हैं लोग उसे चाहते है। बहुत बड़ा गुणवान होते हुये भी जो संवाद नहीं कर पाता लोगो से । उसको देखते ही लोगों में ललक नहीं जागती है कि इनसे हम बात करेंगे। ऐसा मनुष्य भी नहीं चाहिए । बहुत ज्ञानी गुगवान् हो सकता है, चरित्र में बहुत बड़ा हो सकता है, लेकिन संवाद शील नहीं है। आप तक पहुंचने की उसके भीतर आकाङ्क्षा नहीं है । लोग उस तक पहुँचने के लिए लालायित नहीं होते है । ऐसा भी मनुष्य नहीं चाहिए। ऐसा मनुष्य चाहिए कि सारे गुण तो हों लेकिन जनता उसको सिंहासन पर बिठाये और उससे मिलना उससे बात करना चाहे। वह जनता से मिलना और बात करना चाहे। दोनों के बीच संवाद भी हो सके। ऐसा मनुष्य चाहिए । मनुष्य ही चाहिए देवता नहीं। ईश्वर नहीं। इसलिए वाल्मीकि रामायण में अपने गुणों से, अपने संघर्ष से, अपने पुरुषार्थ से मनुष्य ईश्वर हो जाता है । लोग ईश्वर के रूप में पूजा करने लगते है। लोग तो गाँधी जी का मन्दिर बनाकर उनकी भी पूजा करते हैं। इन्दिरा गाँधी का मन्दिर बन गया उनकी भी पूजा करते हैं। द्रोपदी देवी हो ही जाती है। उसके मन्दिर हैं दक्षिण में, क्योंकि महान् नारी थी। अत्यन्त प्रखर तेजस्वी नारी

थी अपने समय की। जनता उसको हृदय के सिंहासन पर बिठाकर पूजती है जो कि जनता के लिए सचमुच प्रेरक बन सकता है। लेकिन पूजा करने से नहीं सब कुछ होगा। सन्तोष के लिये पूजा की जा सकती है। आत्मा का सन्तोष पाया जा सकता है पर समाज तो नहीं चलेगा । समाज कैसे चलेगा? समाज तो उनके गुणों को अपने भीतर उतार रहे थे अपने चरित्र में । तब तो राम ही कथा की सार्थकता सिद्ध होगी। केवल उनका गुणगान करते रहेंगे, उनके नाम के मन्दिर बनाते रहेंगे, उनकी पूजा केवल करते रहेंगे वही उसकी उपयोगिता है। लेकिन वाल्मीकि ने जो उनके जीवन का संघर्ष प्रस्तुत किया । किस तरह से मनुष्य आगे बढ़ता है। संघर्ष करता है अपने जीवन में। इसका जो उन्होंने रखा, उसको सामने रखकर लोग आगे नहीं बढ़ेंगे तो समाज तो आगे नहीं बढ़ेगा। समाज तो रूका रह जायेगा ।

समाज तो पूजा करने में, भक्ति करने में ही अटका रह जायेगा। कैसे समाज आगे बढ़ सकता है? ये वाल्मीकि के राम के उदाहरण से हम देख सकते है कि इस बात को रविन्द्रनाथ टैगोर ने समझा। रविन्द्रनाथ टैगोर महान् कवि ही नहीं थे वे रहस्यदर्शी, महान् दार्शनिक और चिन्तक भी थे। उन्होंने रामायण पर बहुत ही अच्छे, निबन्ध लिखे हैं वाल्मीकि की रामायण पर । उन्होंने कहा है कि यदि कवि वाल्मीकि मनुष्य के चरित्र का वर्णन न करके किसी देवता के चरित्र का वर्णन करते तो उससे अवश्य ही रामायण का गौरव कम हो जाता। उसे काव्य की दृष्टि से क्षतिग्रस्त होना पड़ता । वो एक महान काव्य जो युगों-युगों तक गाया जाता रहे, प्ररणा स्रोत बना रहे, वह नहीं बन पाता। यदि देवताओं का ईश्वरों का चारित्र लिखने लग जाते । मनुष्य की महागाथा उन्होंने लिखी। इसलिए रामायण बड़ा काव्य बना। राम के मनुष्य होने से ही उनके चरित्र की इतनी महिमा है। रामायण में देवता ने पदच्युत होकर अपने को मनुष्य नहीं बनाया। ईश्वर धरती पर उतरकर नहीं आया। मनुष्य ही अपने गुणों के कारण देवता बन गया है। इसी रूप में वाल्मीकि को समझा जाना चाहिए। वाल्मीकि की अनुपम सृष्टि में राम परिपूर्ण मनुष्य के प्रतीक है। मनुष्य हैं इसलिए उनमें मनुष्य का हृदय है। मनुष्य तो कभी लड़खड़ा भी सकता है। मनुष्य में कमजोरियाँ भी हो सकती है लेकिन संभलता है मनुष्य, यही तो उसकी मनुष्यता है। कभी स्खलन भी हो तो स्खनल में अपने आप को संभाल सके। ऐसा मनुष्य हमें चाहियए। जिसने कभी चूक ही नहीं की, स्खलन ही नहीं किया वो तो मनुष्य ऐसा हो नहीं सकता। अपने जीवन में जिससे कहीं भी कभी भी कोई

भूल ही न हुई हो । पैदा होने से अन्त तक। ऐसा मनुष्य तो संभव ही नहीं हो सकता। इसलिए हो सकता है कि राम कभी लड़खड़ाये भी हो अपने आप को संभालते भी है इसलिए तो आत्मवान् और वशी कहते हैं इसलिए राम का चरित्र बड़ा आकर्षक है। जो राम की विशेषता बताई गई है उनको मैं एक-एक कर के लूँगा वो सब नहीं ली जा सकती है। वाल्मीकि रामायण से उदाहरण दूंगा और कैसे वो विशेषताएँ आज हम अपने भीतर उतारें तो हम भी राम जैसे हो सकते हैं। यही एक मात्र उपाय है। उनका अभ्यास करना, अपने जीवन के संघर्ष में राम को एक प्रकाश स्तंभ की तरह सामने रखकर आगे बढ़ना।

नारद ने कहा ''सर्वलोकः प्रियः'' सारी जनता उन्हें चाहती है। आरंभ में ही वाल्मीकि कहते हैं - राम जब

राजकुमार थे , युवराज थे, और विवाह भी उनका नहीं हुआ था । राज्याभिषेक तो हुआ ही नहीं था । राज्याभिषेक की चर्चा भी आरंभ नहीं हुई थी। उस समय के वर्णन में अयोध्या काण्ड के 15वे सर्ग वाल्मीकि कहते हैं-

''नहि तस्मात् मनः कश्चित् चक्षुषि वा नरोत्तमात्।

नरः शक्नोत् कृपा कृष्टुं, अतिक्रान्तेऽपि राघवे।।''

एक बार कोई राम को देख लेता तो उसकी आँखें लगी रह जाती। टकटकी बाँधकर वह देखता रह जाता। इतने प्रियदर्शन तो थे। आँखो से ओझल हो जाते तब भी उनकी छवि आँखो के सामने बनी रहती कि हमने कैसे आदमी को देखा। भूलना कठिन है। उनके चेहरे से आँखे हटाना संभव नही होता था। एक बार वो सामने आ जाएँ तो इतने प्रियदर्शन होते। ये केवल सुन्दर बनने से ही होता है प्रियदर्शन कोई व्यक्ति। उसमें गुण उसके साथ होते है और जनता से जुडने का उसके भीतर एक संवाद पुरूष मौजूद रहता है। तब लोग उसकी ओर टकटकी व लगाकर देखेंगे। इसलिए कही भी सुन्दर नही कहा है। प्रियदर्शन कहा है। उनको अच्छा लगता है राम को देखते रह जाना। उनका व्यक्तित्व है। उनका चरित्र है। वैसा चरित्र बनायें कि लोग आपको केवल खूबसूरत मानकर आपकी सराहना न करें। ये राम का सन्देश है। इसलिए कहते है-

''यस्य रामं न पश्येत् यं च रामो न पश्यति।

निन्दिता सर्वलोकेषु, स्वात्मानं तेन विगर्हते।।''

वो कहते है कि अयोध्या की जनता में राम की क्या छवि थी? वो तो राजकुमार ही थे। लेकिन जिसने इस राम को नही देखा और जिसको राम ने नही देखा, उसको लोग कहते थे कि तुम्हारा तो जीवन ही बेकार गया। लोग उसकी भर्त्सना करते है कि तुम कैसे अभागे हो तुम राम की दृष्टि में नही पड़े और राम पर तुम्हारी आँखें नही पड़ी। तुम्हारा तो जीवन ही सफल नही हुआ। वो स्वयं भी अपने आप को धिक्कारता कि मेरा कैसा जीवन है मेने राम का अब तक देखा ही नही। सब लोग उनकी तारीफ करते है। सब लोग उनको देखना चाहते है। वाल्मीकी कहते है कि तभी अयोध्या है जब तक राम उसमें है। सच्ची अयोध्या नही है जहाँ राम है। केवल मूर्ति उनकी नही है। सचमुच में जीवन्त रूप में हमारे भीतर राम यदि है तब हमारे भीतर अयोध्या है तब भी यही बताते है कि मनुष्य के भीतर है। वनवास के समय राम जा रहे है। तो सारी जनता उमड़ पड़ती है उनके पीछे जाने को इस प्रसंग को सभी रामायणों में लिया गया, रामचरित मानस में भी जो तुलसीदास का है। अन्य रामायणों में भी कि लोग कहते है कि हम ऐसी अयोध्या में नही नही रहेंगे जहाँ राम नही है। और क्या शब्दावली है। इस शब्दावली में बात नही कही गई। लोग कहते है कि हमारे घर जिनमें सारी सम्पत्ति है कैकेयी उसको रखले, अपना कब्जा कर ले। हम तो इनको छोड़कर के जा रहे है। राम के पीछे। इनमें चूहे दौड़ेंगे अब। कोई नही

रहेगा। सूनी हो जायेगी अयोध्या। सब चले जाते है यहाँ से। इसी तरह लोग अपने घरों से बाहर निकल आते है। वो तो राम है कि किसी तरह उनको समझा बुझाकर के लौटाने का प्रयास करते है। जब बात नही बनती है तो चुपचाप आगे बढ़ जाते है। दुःखी होकर वापिस लौटते है। यह प्रसंग भी वाल्मीकी रामायण और अन्य रामायणों में आता है। राम जन-जन की चेतना से एकाकर हो चुके है। लोग उन्हें अपना मानते है। तभी तो सब लोग निकल पड़ते है घरो से बाहर। यह मानवीयता जो है। आदमी चरित्र से भी बड़ा हो सकता है, ज्ञानवान् हो सकता है लेकि न वाल्मीकि यही पूछते है मनुष्य पहले होना चाहिए। मनुष्य हमें चाहिए। लोग पूजा करे देवता माने वा नही। आदमी इंसानियत उसमें हो। मनुष्यता उसमें हो। ऐसा चरित्र हम गढ़ना चाहते है। समाज को बताना चाहते है। राम किस सीमा तक प्रेम करते है मनुष्य से, वो कितने संवेदनशील हो सकते है। पराकाष्ठा संवेदनशीलता की जो हम वाल्मीकि के राम में देखते है, उसको एक उदाहरण से ही में स्पष्ट करने का प्रयास करूँगा। कि सीता के हरण के बाद राम बहुत दुःखी है। कितना विलाप करते है सीता के लिए। वो चाहते थे सीता को। फिर हनुमान सीता का सन्देश ले कर आते हैः-

'' हे हरि हे बानर श्रेष्ठ हनुमान तुमने जो उपकार हमारे लिए किया है। तुमने इतना बड़ा काम जो हमारा कर दिया उसको भीतर ही भीतर में अपने पचा जाऊँ। मेरे भीतर ही वह जीर्ण हो जाये। भूँल जाऊँ ये नही कहते। मेरे भीतर वो पच जाये। हमेशा याद तो रखूँ कि तुमने मेरे लिए क्या किया। लेकिन बाहर नही आयेगा कभी अब। ये नही सोचूँगा कि मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ? क्योंकि जैसे ही आदमी ये सोचता है ये साधारण मनुष्य की बुद्धि होती है कि इन्होने बड़ा काम हमारे लिए किया अब हम इनके लिए क्या करें? जैसे ही ये बात उनके मन में आती है वैसे ही उनके मन में ाता है कि कभी इनमें भी विपत्ति आयेगी। हमने किसी से रूपये उधार लिए है लौटाने जाते है वो कहते है कि जरूरत पड़े तो बताईयेगा। हमाने मन में कही ये बात रहती है कि इन पर भी बीतेगी कभी। जैसे हम संकट में पड़ गये, उधार लेना पड़ गया। कभी न कभी इन पर भी आयेगा। बीमार पड़ेंगे तो इनकी सेवा कर देंगे। ये तो सच्चा प्रेम नही है। ये तो सच्चा लगाव नही है। राम कितने संवेदनशील है वो ये कहते-कहते रूक जाते है कि मैं कुछ करूँ तुम्हारे लिए। क्योंकि वो जानते है कि जैसे ही ये बात मन में आयेगी कि मैं करूँ तुम्हारे लिए वैसे ही कही न कही उनके भीतर ये बात रहेगी कि तुम्हारे ऊपर भी कभी न कभी दिक्कत आयेगी ऐसा क्यों सोचूँ में। इस आदमी से मेरा इतना लगाव है उसके लिए मैं कैसे सोचूँ। अरे दिक्कत आयेगी तो राम तो प्राण न्यौछावर कर ही देंगे उनके लिए कहने की बात थोड़े ही है। कहने को बात नही होती ये। जैसे ही ये कहने को होता है आदमी उसके मन में ये बात आ जाती है कि इस पर भी कभी बीते। ये तो आप उसका बुरा सोचने लग गये। उसका उपकार करने के लिए राम इतनी गहराई से संवेदनामय है कि अपनी जुवान पर ऐसा शब्द नही आने देते है।

कि तुम्हारे लिए मैं कुछ करूँ। क्योकि जैसे ही वो ये कहेंगे ये स्वार्थ बुद्धि भी होगी। उपकार के बदले कुछ प्रत्युपकार करके हम निपट जाते है। उदाहरण दिया हम कभी आपका भला कर देंगे। ये तो सांसारिक सम्बन्ध है। जो

सच्चा लगाव है किसी से जैसा कि हनुमान का राम के प्रति, जैसा राम का हनुमान के लिए है। ये सच्चे अनुराग के सम्बन्ध में है। उनमें इस तरह का सवाल नही आता है कि बदले में क्या कर दूँ। इस तरह का सोच ही नही आता। बदलें में तो हम एक प्राण है। बदला चुकाने की तो कोई बात ही नही है। जहाँ अलगाव होता है, लगाव नही होता वहाँ इस तरह की बात जुवान पर आती है। राम की जुवान पर इस तरह की बात नही आती है। लेकिन इतना प्रेम, इतना लगाव अपने लोगो से अपनी वानर सेना से तभी तो सब लोग सारा वानर समाज उनके साथ चल पड़ता है। अयोध्या के लोग चल पड़ते है। उसके साथ जैसा वाल्मीकि चाहते है कि सांसारिक ज्ञान, व्यवहार का ज्ञान, प्रत्युत्पन्न मति और बुद्धि ये सब भी होने चाहिए। देश का सोचकर के बात करते है राम। संकट के समय वे कितनी अच्छी तरह परिस्थितियों को समझतें है, जब राम को बारीकि से हम देखते है तो पता चलता है कि राम कितने समझ रहे थे। राजमहल में जो संकट था उसको केवल राम ही समझ रहे थे बाकी लोग नही समझ पा रहे थे। बाद में जब वो जर्चा करते है लक्ष्मण को बताते है। तब सामने आता है कि अन्तःपुर में राजमहल में सारी राजनीति उसको राम कितनी गहराई से समझते है। दशरथ उनको बुलो है और कहते है कि कल ही तुम्हारा अभिषेक कर दूँगा। तुम्हारा मै कल ही राज्याभिषेक कर देता हूँ। जब तक मरत बाहर है तब तक ये कार्य निबट जाना चाहिए। क्योंकि मनुष्य के चित्त का कुछ कहना नही। कुछ कहा नही जा सकता कि कब किसके मन में क्या बात आ जाये। राजनीति है। कौन कब क्या सोचले। इसलिए राज्याभिषेक तुम्हारा हो जाये। क्योंकि दशरथ अपनी प्रजा को बहुत चाहते है। कुछ नादानी तो उन्होने कर दी। कैकेयी से विवाह कर लिया। बुढ़े थे और एक युवती से एक कम उम्र की राजकुमारी से विवाह कर लिया। उसके सौन्दर्य पर मुग्ध हुये। बचन दे दिया। राज्य शुल्क पर विवाह किया दशरथ ने वाल्मीकि बताते है। अन्य रामायण बताती है या नही बताती लेकिन सत्य तो यह है। यथार्थ तो यह है कि वचन दे दिया था कि उसका जो बेटा होगा वही राजा बनेगा।

कैकेयी के पिता को ये वचन देकर के विवाह कर लिया। कैकेई को भी ये मालुम था कि मुझसे विवाह इस शर्त पर हुआ है। ये राम को मालुम था। अच्छी तरह से मालुम था। लेकिन वो पिता की आज्ञा, पिता के सामने जो मर्यादा है उसके कारण चुप रहते है। कितना बड़ा बोझ उनके मन पर रहा होगा। सारी बात जानते हुये उनसे कहा जा रहा है कि तुम्हारा राज्यभिषेक कर दूँगा क्योंकि मन्त्री परिषद ने निर्णय ले लिया। सारी प्रजा तुम्हें चाहती है तो राम कितने बड़े धर्म संकट में है। सारी स्थिति वो जानते है कि मेरे पिता ने वचन देकर के विवाह किया है। तो भरत को राजपद दिया जाना चाहिए। सारी प्रजा का आग्रह, मन्त्रिमण्डल का आग्रह, पिता का आदेश सिर झुकाए हुए खड़े हुये है और जब थोड़ी देर बाद कैकई वरदान मांगती है और राम को पता चलता है तो चेहरे पर कोई सिकन नही। ''न चास्य महती लक्ष्ये राज्य नाशोऽपकर्षति।'' राज्य छिन गया। कल ही राजपाठ मिलने वाला था। कोई चिन्ता नही। राम कहते है क्योंकि वो जानते है कि वास्तविकताएँ क्या है? कैकई को समझाते है कि माता आप चिन्ता मत करिये। ''रामोऽधीर नाभिमाषते।'' मैने कह दिया है कि मैं पिता का वचन मानता हूँ। तुरन्त वन चला जाऊँगा। तो मैं जा रहा हूँ। आप अपने बेटे के लिए राजपद चाहती

है। उनको मिलेगा वो प्रसन्न मुख से कहते है। उनके मन से बोझ भी हट गया है। प्रजा की सेवा करना चाहते थे राजा के रूप में लेकिन जो होना चाहिए था वो हो गया तो प्रसन्न होकर के जाते है। लेकिन थोड़ी देर बाद अपनी माता से मिलने जाते है तो चिन्ता की रेखाएँ उनके चेहरे पर है। उसका बहुत ही मार्मिक वर्णन वाल्मीकि ने किया है। कौशल्या के भवन में जब प्रवेश करने लगे तो वही राम जो हसते मुस्कुराते हुए निकले थे कैकेई को वचन देकर के वो अपनी माँ से मिलते हुए एक दम से चिन्तातुर हो जाते है। वो जानते है कि मैं जब तक हूँ तब तक मेरी माता सुखी रहेंगी। मैं निकल जाऊँगा। यहाँ से तो पता नही क्या होगा? वो आशंका उनको है। कौशल्या तो साफ बताती है मुझे बहुत सताया जायेगा। मै वैसे भी उपेक्षित हूँ। कैकई की तरफ बड़ा प्रेम है। महाराज का। उसी के महल में वो बने रहते है। बाकी जो रानियाँ है वा उपेक्षित है तो मेरी क्या दशा होगी?

तुम जब तक हो तब तक मुझे आसरा है ये सब वो कहती है मुझे हृदय को भेदने वाले वाक्य सुनने पड़ेंगे। मुझे पता नहीं क्या क्या सुनना पड़े। तुम्हारे रहते हुए ये सब मैं सह लेती थी लेकिन तुम नहीं रहोगे तो कैसे सहूँगी? माँ का दुःख वो जानते हैं- इसलिए राम जाते-जाते ही अपने पिता को समझाते हैं कि मेरी सभी माताओं का बराबर आप ध्यान रखिएगा। जो उनको आशंका है कि राजा के अन्तःपुर में तो पता नहीं क्या क्या होता रहता है? दास-दासियाँ तक षड़यंत्र करते हैं। इसलिए जो व्यवहार का ज्ञान है राम का बराबर बना हुआ है। साथ ही उनकी संवेदनशीलता जनता का लगाव, सारे आदर्श लेकिन जो यथार्थ है जीवन का उसको ये बहुत बारीकि से समझते हैं। और केवल राम ही समझ रहे हैं पूरी रामायण में। आप देखते हैं कि न तो दशरथ समझ पा रहे हैं हकीकत को न कैकेई, न बाकी कोई। राम ही इस हकीकत को समझ रहे थे। जब लक्ष्मण कहते हैं मैं आपके साथ चलूँगा तो राम कहते है कि तुम भी अगर चल दोगे तो यहाँ पता नही क्या होगा? तुम रहोगे तो तुम निगरानी रख सकोगे। संभाल सकोगे हमारी सब माताओं को।

''मया दिशा सौमित्रे त्वयि गच्छति तद् वनम्।

को भोजेस्याति कौशल्यां सुमित्रामा यशास्विनीम्।।''

मेरी माता कौशल्या और सुमित्रा का कौन ध्यान रखेगा? यदि तुम भी चल दोगे इनके भोजन पानी की व्यवस्था कौन देखेगा? पता नही क्या हो जायेगा ये आशंकाएँ जो कि दूरदृष्टि उनकी है कि ऐसा हो सकता है संभव है कि ऐसा नही हो लेकिन आशंका तो है ही। इसलिए यहाँ किसी को रहना चाहिए। तुमको तो यहाँ रहना ही चाहिए। ऐसा वो कहते है। ये सब बातें वो समझाते है। बाद में जब लक्ष्मण बहुत कोसते है कैकेई को कि कैसा बुरा उसने किया। बनवास के समय दुःखी हो रहे है लक्ष्मण तो राम समझाते है कि भैया जो कुछ हो गया ठीक हो गया। बहुत पहले की बात है जब हमारे पिता ने हमारी तीसरी माता से विवाह किया कैकेई से। तो मातामह मतलब नानाजी को उन्होने कैकेई राज को राज्य शुल्क का वचन दिया था कि इसका जो बेटा होगा वही राजा होगा। तो यह ठीक हो गया।

उसमें क्या दुःख करना। उसने वरदान भी मांग लिया तो ठीक किया। ये जो सारी यथार्थ स्थितियाँ है जिनको बाद में लोग रामायण में नही चित्रित करते पर सच्चाई तो वही थी। सच्चाई को भुलाकर के आप रामायण की कथा कहेंगे तो इतिहास के साथ न्याय तो नही हो सकेगा। जो वाल्मीकि ने किया। इस सारी सच्चाई के बीच राम अडिग रूप में अपने चरित्र पर दृढ इस रूप में सामने आते है और सीता को भी समझाते है वनवास के समय वो चिन्त्रित होते है कि तुमको ध्यान रखना होगा अपनी सारी सास माताओं का, ससुर का इसलिए तुमको यहाँ रहना चाहिए। सीता के प्रति बडा गहरा अगाध प्रेम उनके मन में है। तो यह अकेली यहां रह जायेगी तो यहाँ इसका क्या होगा यह भी चिन्ता है। बहुत करूण चित्र वाल्मीकि ने खींचा है। कौशल्या से जब मिलने जाते है विदा लेने के लिए तब उनके मन में दुःख है। सीता को जब बताने जाते है कि मै जा रहा हूँ तुमको यही रहना है। उस समय हसते मुस्कुराते हुये विदा नही लेते है सीता से। क्योंकि ये तो पति-पत्नी की विदाई है कैसे यहां फूल जैसी राजकुमारी छूटी रह जायेगी। मेरे बिना वा कैसे रहेगी? मैं तो फिर भी रह लूँगा। लेकिन कोमल हद्वय की लड़की है, अवस्था भी ज्यादा नही है, तो ये चिन्ता उनके भीतर है। इस चिन्ता के साथ वो सीता को समझाते है, लेकिन सीता तो तेजस्विनी क्षत्रियाणी है। वह तो राम से हँसी करने लगती है उस समय ठिठोली करती है और कहती है कि तुम पुरूष हो या क्या हो? तुम इस बात से डर रहे हो कि मै तुम्हारी परेशानी का कारण बन जाऊँगी। मेरी तुमको देखरेख करनी पड़ेगी, मेरी चिन्ता रहेगी बनवास में। मैं तुम्हारे आगे तुम्हारे काँटे रौदते हुये चलूँगी रास्ते में। मैं तुम्हारी कमजोरी नही तुम्हारी शक्ति बनकर साथ चलूँगी। ये सीता कहती है। सीता बहुत सुशील है। राम भी हँसते हुये सीता की बात सुनते है। ये सम्बन्ध दोनो का है जो दाम्पत्य सम्बन्ध दोनो का है उसकी बहुत बड़ी कविता वाल्मीकि रामायण बनती है और राम मर्यादा पुरूषोत्तम है, जितेन्द्रिय है, जित क्रोध है, यथार्थ की गहरी पकड़ रखते है। उतने ही बड़े ने अनुरागी है। सीता के प्रति अनुराग रखने वाले, दाम्पत्य का जो उदाहरण राम ने रखा उसके कारण समाज भारतीय समाज बहुत कुछ बना टिका रहा है। क्योंकि किसी धर्मशास्त्री ने ये नहीं कहा कि आदमी एक ही विवाह करे। एक किसी धर्मसूत्र में मुझे मिला, मुझको याद नहीं है। पचासों धर्म सूत्र लिखे गये। पचासो स्मृतियाँ लिखी गई। मनुस्मृति याक्षवल्क्य स्मृति, पाराशर स्मृति, नारद स्मृति, विष्णु स्मृति। किसी ने ये नहीं कहा कि पुरुष एक विवाह करे एक पत्नी व्रत निभाये। ये तो राम आदर्श रख कर के गये। लोगों न जाना कि कितना बड़ा आदर्श है। इसे अपना लो तो उबर जाओगे। बहु विवाह कितना खतरनाक है। उससे किस तरह से परिवार टूटते है। दशरथ ने बहुत सारे विवाह किये। उसी से तो सारा अनर्थ का सिलसिला शुरू हुआ। तो ये पत्नीव्रत का आदर्श जो राम ने रखा यहाँ तक रखा कि सीता का त्याग तक उनको करना पड़ा। प्रजा से इतने एकाकार थो कि जो प्रजा सोचती है वही मेरा सोच फिर हो गया। प्रजा की संवदनाएँ मेरी संवेदनाएँ हो गई। यदि एक वर्ग समाज का ऐसा है कि जो ये सोचता है कि सीता का राम के साथ रहना ठीक नहीं है। तो जब तक उनको विश्वास ना हो जाये कि सीता पवित्र है, उनको साथ में रहना चाहिए। जब तक सब लोग मान लें तब तक एक राजा के रूप में मेरा जो जनता लगाव है वो चरितार्थ नहीं होगा। इसलिए सीता का परित्याग कर देते हैं वाल्मीकि के राम। सीता

कभी शिकायत नहीं करती। बाकी सारी नारियाँ समाज की स्त्रीयाँ राम को लांछित करें, कवि भी लांछित करते हैं। लोकगीतों में राम को लांछित करते हैं। कहते है कि बिना अपराध के राम ने सीता को त्याग दिया। हमें तो लगता है कि यहाँ निरपराध स्त्री को त्याग दिया तो कितना गलत हुआ। लेकिन सीता जिसका त्याग किया गया है उसने तो कभी कहा ही नहीं। वो जानती थी कि कितना गहरा प्रेम मुझसे राम को है। मुझे सजा उन्होंने नहीं दी है। उन्होंने प्रजा का जो सारा कामना है वो अपने ऊपर लेते हुये अपने आप को सजा दे डाली। बहुत बड़ी सजा क्योंकि राम ने जो दुःख भोगा सीता का त्याग करते हुये उसको तो भवभूति की वाणी से ही जाना जा सकता है। वो वाल्मीकि के अनुसार कथा फिर से लिखते हैं कि कितना गहरा दुःख उनके मन में हैं। और फिरयह किसी रामायण में नहीं आया। ये जो संवेदनशीलता जो गहरा दुःख, करुणा, वाल्मीकि रामायण का जो प्रधान रस है करुणा है। भक्ति का रस नहीं है।

श्रृंगार भी नहीं है। करुणा की महागाथा है। राम की जो करुणा है सीता की जो वेदना राम की जो वेदना है उसकी कथा है। उस वेदना से गुजर के मनुष्य महान् बनता है। ये हम राम के चरित्र के द्वारा और सीता के चरित्र के द्वारा यहाँ पर देखते हैं। बहुत सारी बाते हैं राम के चरित्र के बारे में। जैसा मैंने कहा कि कहीं कहीं कमजोरी के क्षण आते हैं। अत्यन्त दुःख के क्षणों में कभी-कभी कमजोर पड़ता है। कैसे अपने आपको संभलता है। ये जब तक नहीं बताया जायेगा तब तक बाकी लोग कैसे सीखेंगे कि गहरे दुःख से गुजरते हयु कैसे संभाला जाये अपने आप को। राम को स्मृतियाँ आती है बार बार। प्रेम बहुत करते थे अपने पिता से, अपनी माता से, अपनी प्रजा से। उन सबको छोड़कर चले आये। तो उनकी यादें तो आयेगी। बाकी रामायणकारों ने तो लिखा ही नहीं कि उनके मन में कैसी कचोट है। क्या हुआ होगा जब अयोध्या के लोगो को मैं छोड़कर आया हूँ। क्या हुआ होगा महाराज दशरथ का। उनकों तो पता ही नहीं कि वो गुजर चुके हैं। इतना प्रेम करते थे अपने बेटे राम से कि झेल नहीं सके उस दुःख को उस वेदना को जो वचन दे दिया था उसको निभाने के लिए कैकेई को वचन दिया, कैकेई के पिता को वचन दिया दोहरा वचन था। उसे निभाने के लिए मैं कितना टूट गया कि प्रजा का सारा असन्तोष मेरे ऊपर, प्रजा की जो इच्छा है वो नहीं निभा सका। जो कि मेरे जीवन में व्रत रहा कि प्रजा को सन्तुष्ट रखूँगा। वो व्रत मुझे तोड़ देना पड़ा। ये सब दुःख उनके भीतर था उसके कारण हृदय टूट गया। दशरथ गुजर चुके हैं ये राम को पता नहीं है चित्रकूट में जब तो है। भरत मिलाप नहीं हुआ हैतो कितनी चिन्ता उनके भीतर है कि रात को उनको नींद आती होगी या नहीं। पता नहीं आज पिताजी को नींद आई होगी या नहीं ये सोच रहे हैं। आज की बात कर रहे हैं लक्ष्मण से कह रहे हैं कि पता नहीं पिताजी को नींद आई होगी या नहीं। माता कैकेई तो सुन्तुष्ट होगी क्योंकि भरत को राज पाठ देना चाहती थी, भरत आ गये होंगे। राजपाठ उन्होंने ले लिया होगा। कैकेई सन्तुष्ट होगी। भरत भी ठीक ही होंगे। लेकिन बाकी लोग, बाकी माताएँ वो क्या झेल रही होगी, वो कैसी होगी्? पिता पर अनुराग बहुत है।

कितने अकेले पड गये होंगे ये कहते हैं। 'अनाथष्चैनवृद्धष्चमया चैव विना कृतः।' मेरे उपर उनका बडा प्रेम था।

उनको बडा सहारा ाा मेरा। अनाथ भी हो गये इस समय। बूढे हो गये हैं वो। मेरे बिना ''किं करिष्यति धर्मात्मा'' धर्म प्राण हैं दषरथ। धर्म निभाने के लिए उन्होंने अपने प्राण दे दिये। कैकेई के वष में रहे वो हमेषा। अब क्या हालत उनकी होगी ?

''अपि इदानीं तु कैकेई सौभाग्य मद मोहिता।

कौशल्यां च सुमित्रां च स प्रमादयत् मत्कृते।।''

ऐसा तो नहीं है कि माता कैकेई माता कौशल्या माता सुमित्रा को कहीं सता रही होगी। ऐसा सोचते हैं। ये साहस चाहिए ये सब लिखने के लिए। वाल्मीकी ने जिस राम को रचा। वो ऋषि है वो कह सकते हैं राम के मुख से ये सब कहलवा सकते हैं सच्चाईयाँ। सच्चाई तो है। ये सब चिन्ताएँ तो होनी चाहिए। जो सच्चाई को जानता है उसके अन्दर तो ये चिन्ताएँ होगी। तुलसीदास ने नहीं लिखा। अन्य रामायणकारों ने ये नहीं लिखा। राम के भीतर जो चिन्ताओं का ताना बाना है उसका चित्रण यदि नहीं किया तो वाल्मीकि से जानना चाहिए उनको कि एक मनुष्य के रूप में राम किस तरह से संकट को झेलते हैं और उससे उबरते भी हैं। बहुत सारे प जो उनके चरित्र के हैं वाल्मीकि उनको इस तरह से उकेरते हैं कभी कभी कितना गहरा संकट राम के उपर है कि उनके लिए लक्ष्मण सहारा बन जाते हैं। ऐसी संकट की घड़ी में। जब सीता का हरण हो जाता है राम टूट जाते हैं तब लक्ष्मण उनका सहारा बनते हैं। जब एक कबन्ध राक्षस सीता को अपने एक हाथ से पकड़ लेता है और भागने लगता है तो राम जो कुछ कहते हैं वो कितना कोमल हदय का व्यक्ति राम है ये उसमें देखते हैं। वो लक्ष्मण से कहते हैं कि किसी पुरुष के लिए कितना बड़ा अपमान होता है कि देखते-देखते कोई उठाकर ले जा रहा है उसको। कैसे मैं इसको बर्दाष्त करुँगा। यदि सीता को मैं वापिस नहीं ला सका वो भाग गया लेकर के। लक्ष्मण उस समय उनको समझाते हैं कि हम दोनों लड़ते हैं। कबन्ध तो बड़ा दुर्दान्त राक्षस है। जैसा उसका स्वरूप है उसको वरदान है कि वो एक हाथ फैलायेगा, उसमें जो आ जाये उसको वो खा लेगा। उसने हाथ बढ़ाया सीता उसके हाथ में आ गई।

उसको शाप मिला हुआ था ऋषि का उसमें एक छूट दी गई थी कि वो एक हाथ से सब कुछ कर ही सकेगा। तब दोनो भाई मिलकर के किस तरह उसके हाथ को काटते हैं बड़ी कठिनाई से। ये मनुष्य का जो संघर्ष है दोनों उस समय प्राणपण से भिड़ जाते हैं राक्षस से। ऐसे संकट के समय मनुष्य अपना धैर्य ना खोये और जूझता रहे तो उभरता है। यही सन्देष वाल्मीकि देना चाहते हैं।

सौ वर्ष की आयु मनुष्य की होती है। निरन्तर उसकों संघर्ष करते रहना चाहिए और संकटों से उबरेगा। तब जो आनन्द है तो जीवन आनन्दमय है वो जानेगा। संकटों से गुजरकर जाने का। तो राम तो एक मनुष्य के रूप् में सचमुच में इतने गहरे संकट और त्रास से गुजर है और उबरते भी हैं। कैसे उससे उबरना है अपने धैर्य से फ्रि अपने आप को संभाल कर के उबरते हैं और हमको बताते हैं। ऐसे कई क्षण राम के जीवन में आते हैं। जबकि लक्ष्मण बेहोष पड़े हैं। इन्द्रजीत की जो शक्ति है उससे मूर्च्छित पड़े हैं। लक्ष्मण पर कितना गहरा प्रेम उनको है। शंका है कि वो जीवित होंगे या नहीं। सुषेण वैद्य

अभी नहीं आया है। राम को बहुत चिन्ता है। अपने प्रेम के कारण चिन्ता तो होती है। एक मनुष्य के रूप् में लक्ष्मण के लिऐ जो उनकी जो गहरी चिन्ता ह। इतने ज्यादा वे कावर हो जात हैं कि बाकी लोगों से कह देते हैं कि आप लोग चले जाइये। अब कोई उम्मीद नहीं। लक्ष्मण मेरा भाई इस तरह से पड़ा हुआ है। श्वाँस उसकी वापिस आयेगी या नहीं। मुझे आप यहाँ छोड़ जाईये मैं संभाल लूँगा। लेकिन अब कोई आषा नहीं है। सुग्रीव से कहते हैं कि आप चले जाओ यहाँ से। अंगद को ले कर के सारी वानर सेना को लेकर चले जाओ। मुझे अपने भाई के पास छोड़ दो। अब कोई आषा ही नहीं बची है तो किसके लिए लड़ना। किसके लिए युद्धकरना अब। लक्ष्मण था मेरे साथ में युद्ध कर रहा था। ये जो प्रेम के कारण राम जो इस तरह से बोलने लगते हैं लेकिन थोड़ी देर में संभाल लेते हैं जब विभीषण आते है और कहते हैं कि सुषेण वैद्य आ रहा है और सब कुछ ठीक हो जायेगा। ये जो उतार चढाव जीवन के एक मनुष्य के जीवन में आते हैं। इनसे मनुष्य कैसे उबरता है। ये राम के चरित्र से हम सीखते है। दुःखें में अपने आप को हम संभाल सकते हैं यदि रा का चरित्र सामने है। इस समय हम बहुत दुःख के समय हम है। बड़ा संकट का ये काल है।

तो कैसे कौनसा चरित्र हमारे सामने हो जिससे हम सीख सकें। जो वाल्मीकि ने सवाल किया था कि हमारे समय में कौन है जिसको कि एक प्रकाष स्तंभ के रूप् में हम समाज के सामने रख सकें। राम का चरित्र अभी भी हो सकता है। क्योंकि मनुष्य संघर्ष करता हुआ कैसे अपने संघर्ष में विकट संकटों से उबर सकता हे ये राम के उदाहरण से हम आज भी बता सकते हैं और सीख सकते हैं। यदि मूर्ति बनाकर पूजा करना है तो बहुत अच्छा है करते रहना चाहिए। लेकिन जीवन का जो यथार्थ है उसमें राम काम आयेगा। वो वाल्मीकि का राम काम आयेगा। जो प्रेम है वो अन्य किसी राम में वैसा नहीं है जो लगाव, संवेदना, गहरी संवेदना जो राम के मन में सीता के लिए है। इसलिए रविन्द्रनाथ कहते हैं कि रावण की विजय कथा भर यह नहीं है। राम के पराक्रम की गाथा की कथाभर यह नहीं है यह सीता और राम के प्रेम की कथा है। ये दाम्पत्य जीवन के महागाथा है क्योंकि भारतीय संस्कृति में गृहस्थाश्रम सबसे बड़ा आश्रम है। ये तो स्मृतिकार भी कहते हैं कि चारों आश्रमों में गृहस्थाश्रम सबसे बड़ा आश्रम है। पालता पोषता तो वही है। गृहस्थ ही संघर्ष करके बाकी तीनों आश्रमों को जिन्दा रखता है। गृहस्थ होना सबसे बड़ी बात है। ये जो गृहस्थाश्रम की गरिमा और गृहस्थाश्रम में दाम्तत्य प्रेम की गरिमा और गाथा अनुराग है एक दूसरे के लिए उसकी कथा वाल्मीकि रामायण बनती है इस रूप में। सीता के लिए जो राम के मन में वेदना है प्रेम है। सीता नहीं है तो वो कैसा अनुभव करते हैं वो कहते हैं-

केदारस्येव केदारः शोधकस्य निरोधकः।

जीवन्तिताम् श्रृणोमि श्रृणोमि यत्।।

ऐसा वो कहते हैं। जैसे एक सूखी क्यारी सींची हुई क्यारी से मिलकर जी उठती है ऐसे ही मैं जी उठूँगा जी जाऊँगा। यदि मुझे ये पता चल जाये वो जिन्दा है, मौजूद है। ये कितनी गहरी चिन्ता उनको है। बाकी सब हो रहा है वो

ठीक है। कोई हर ले गया, पता नहीं कहाँ है, कैसे है, लेकिन जीवित है कोई ये भी तो आकर बता दे कि है वह। ये जो प्रेममय चिन्ता मनुष्य को होती है इस रूप में किसी और ने नहीं कहा। ये उपमा इस तरह से जो आई है जो गहरी वेदना है। राम के भीतर जो गहरी वेदना है कहते है कि क्या करूँ? सागर में फँस कर के सो जाऊँ क्या? इतनी गहरी पीड़ा वेदना मेरे भीतर है। राम कहते हैं सबसे-यही दिलासा दे सकता हूँ इस समय इसी धरती पर कहीं वह है और इसी धरती पर कहीं मैं हूँ। चाहे कितनी ही बड़ी यह धरती हो, कभी न कभी इसको नाप कर मैं उसे पा ही लूँगा। है तो इसी धरती पर। परलोक तो नहीं चली गई है। किसी लोक में तो नहीं है। क्योंकि हनुमान बता चुके हैं कि है लंका में। इतनी वेदना इतनी पीड़ा है मन में। बार बार इसी बात से मैं अपने आप को दिलासा देता हूँ। इसी धरती को उसके कदम छू रहे हैं। इसी धरती को मेरे कदम छू रहे हैं। यह राम कहते हैं और

केदारस्येन केदाः शोधकस्य निरोधकः

उपस्नेहेने जीवामि जीवन्तिं यक्ष्हृणेमिताम्।।

ये वाल्मीकि की उपमा है। खेते में जब पानी दिया जाता है तो सींची गई क्यारी में जो थोड़ा सा मुहाना रहता है उससे सूखी क्यारी अपने आप सिंच जाती है। मुझे इतना भर कोई बता दे कि सीता है मौजूद है वह जीवति है तो जैसे सूखी क्यारी जी उठती है उसी समाचार से मैं सिंच जाऊँगा, जी लूँगा मैं। वे अपने प्रेम को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि मैं एकाकार हूँ सीता से मैंने अपने हृदय का सम्पूर्ण भाव सीता में समाहित कर दिया। एक हो गया। मैं लग भी कहाँ हूँ। इसलिए जिसको निर्वासित किया वह कोई अन्य नहीं था। मैंने अपने आपको निर्वासित किया। सीता का जब उनहोंने निर्वासन किया, प्रजा के लिए उन्होंने अपने आपको निर्वासित कर लिया। यह भी तो संभव नहीं था कि वह खुद चले जाते सीता के साथ में। क्योंकि कोई तैयार नहीं हुआ। सबने हाथ उठा दिये कि नहीं हम नहीं। राम ने तो बुला कर कहा था तुम स्वीकार कर लो मैं अब राज करना नहीं चाहता। इतनी गहरी उनको पीड़ा थी जैसे ही सुना उन्होंने कि सीता के बारे में लोग ऐसा सोच रहे हैं। तो सब भाईयों को उन्होंने बुलाया और कहा कि तुम लोग कोई ले ले यह राज। अब ये राज मुझे नहीं करना। ऐसा टूट गये थे। ये बात सुनकर के कि सीता के लिए ऐसा सोच लिया लोगों ने। तो जो निर्वासन हुआ वास्तव में सीता का नहीं वो राम का स्वयं निर्वासन कर लिया। सब का मन रखने के लिए कोई भाई तैयार नहीं हुआ, उन्होंने कहा नहीं आपके बिना कोई राज नहीं हो सकता।

प्रजा तैयार नहीं तो ये जो राम और सीता की प्रेम कथा है वो सारे लोक चिन्ता से जुड़ कर प्रेम कथा बनी हुई है। उसके ताने बाने में ये प्रेम कथा एक अद्भुत प्रेम कथा इस रूप में बनती है। सीता भी इस बात को जानती है - ''अन्योऽन्यः राघवेणां भास्करेण प्रवाहितः।।'' जैसे सूरज से उसकी किरणें कोई अलग नहीं कर सकता उसी तरह मैं राम से अलग नहीं हूँ। राम सूरज की तरह से है तो मैं उनकी किरण। ये सीता कई बार कहती है। हनुमान जब सीता को देखते

हैं तो तुरन्त हनुमान वो कितने बने ज्ञानी है। हनुमान का भी चरित्र वैसा फिर रामायणों में नहीं है। वो तो भक्त पूरी से बन बया। वाल्मीकि रामायण में तो वो परम ज्ञानी, वो भाषा के वे बहुत बड़े ज्ञाता हैं। सीता को देखते ही समझ जाते हैं कि क्या है सीता। वो कहते हैं कि इन्हीं के कारण अब तक राम जीवित है। मैं समझ गया। ये वो स्त्री है इसका ध्यान करते हुए राम अब तक अपने आप को संभाले हुये हैं।

अस्या देव्याः मस्तस्मिन् तस्य चास्याम् प्रतिष्ठितम्।

तेनयैव स च धर्मात्मा मुहूर्तमपि जीवति।।

इस देवी का मन राम में है। सीता को देखते ही समझ जाते हैं राम इनके भीतर रमे हुये हैं। राम का मन इसके भीतर है। दोनों एक दूसरे से एकाकार है। इसलिए दोनो जीवित है। ऐसे संकट केक्षणें में जो पेम है ये जो एकाकार होना है प्रेम में। सीता से राम का जो पेम में उसी तरह से एक राजा के रूप में राम जो है अपनी प्रजा से एकाकार है। इतनी गहराई से अपने लोगों को राम और कसी ने नहीं चाहा जैसा कि राम चाहते हैं। अपने को उनसे अलग नहीं समझते हैं। इसीलिए तो वे इस सीमा तक निर्णय लेते हैं कि सीता का त्याग करने को भी तैयार हो जाते हैं। वाल्मीकि के राम हैं। और भी कई राम है। बड़ा चरित्र हैँ जो राम के रूप वाल्मीकि ने चित्रित किया। लेकिन समय की भी सीमा होती है। फिर कभी रामायण पर और वाल्मीकि के रामायण पर और वाल्मीकि के राम पर चर्चा करने का अवसर आयेगा। तब फिर कभी हम बात करेंगे। इन शब्दों के साथ आप सभी लोगों ने मुझे सुना और मुझे यह अवसर दिया। स्वामी जी ने मुझे यह अवसर प्रदान किया। उनके प्रति मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। मैं एक साधारण मनुष्य हूँ इसलिए ही कह सकता हूँ राम की तरह मैं ये नहीं कह सकता कि मैं अपने मन में कभी ये बात भी नहीं आने दूँगा कि तुम्हारे लिए मुझे कुछ करना है। जो किया है उसे अपने भीतर ऐसे रमा लूँगा कि निरन्तर तुम्हारी याद रहेगी। तुम मुझमें और मैं तुममें हो जाऊँगा। इतना गहरा प्रेम हनुमान का राम से। उतना होने की कोशिश हमे करें तो राम से कुछ सीख सकते हैं। बहुत बहुत धन्यवाद।